श्री कल्लाजी वैदिक विश्वविद्यालय, निम्बाहेड़ा
एवं
राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर

के संयुक्त तत्त्वावधान में
आयोजित

द्वि–दिवसीया राष्ट्रियसंगोष्ठी

वैदिकवाङ्मये पर्यावरणं तत्प्रासंगिकता च
वैदिक वाङ्मय में पर्यावरण और उसकी प्रासंगिकता

चैत्र कृष्ण पक्ष तृतीया–चतुर्थी

गुरूवार–शुक्रवार

दिनांक 28 – 29 मार्च 2024

संस्थान परिचय

वैदिक ज्ञान परम्परा गौरवमयी सनातन संस्कृति का मूल आधार है। वैदिक ज्ञान परम्परा के संरक्षण–संवर्धन के पवित्र उद्देश्य से पावन मेवाड़धरा पर इस विश्वविद्यालय की स्थापना की गई है। जन–जन के आराध्य वीर शिरोमणि श्री कल्लाजी राठौड़ के नाम पर इस विश्वविद्यालय की संकल्पना हुई है।

श्री कल्लाजी वैदिक विश्वविद्यालय की स्थापना राजस्थान विधान मण्डल की अधिसूचना से दिनांक 27 मार्च 2018 को हुई है। वैदिक विश्वविद्यालय की स्थापना का मूल उद्देश्य ऋषिप्रणीत भारतीय ज्ञान–परम्परा के साथ–साथ आधुनिक व वैज्ञानिक विषयों की समन्वित शिक्षा प्रदान करना है। श्री शेषावतार 1008 श्री कल्लाजी वेदपीठ एवं शोधसंस्थान निम्बाहेड़ा द्वारा 30 एकड़ विस्तृत भू–भाग पर प्राकृतिक व सुरम्य वातावरण में संस्थापित यह विश्वविद्यालय वेद, पुराण, दर्शन, साहित्य आदि ज्ञानानुशासनों के साथ योग, विधि, पत्रकारिता, कलासंस्कृति और समाज विज्ञान के अनेक विषयों के शिक्षण की सुविधा उपलब्ध कराने हेतु सन्नद्ध है। यहाँ पर विद्यार्थियों के लिए शैक्षणिक गतिविधि के साथ–साथ व्यक्तित्व विकासपरक सांस्कृतिक व खेलकूद प्रवृत्तियों हेतु भी सहभागिता के समुचित अवसर उपलब्ध हैं।

विश्वविद्यालय परिसर निम्बाहेड़ा शहर से पश्चिम की ओर निम्बाहेड़ा–उदयपुर राजमार्ग पर 7 कि.मी. तथा चित्तौड़गढ़ से 30 कि.मी. दूर है। विश्वविद्यालय परिसर उदयपुर से 100 कि.मी.तथा उदयपुर एयरपोर्ट से 75 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। मुख्य राजमार्ग पर अवस्थित होने से यहाँ सुगमतापूर्वक लोक–परिवहन द्वारा पहुँचा जा सकता है।

संगोष्ठी परिचय

वेद की अशेष ज्ञानराशि सार्वभौमिक तथा सार्वकालिक उपादेयता की दिशा में कालप्रमाणित एवं सिद्ध–परीक्षित है। वेद सम्पूर्ण मानवजीवन का आचरणीय दर्शन है। वेदनिर्दिष्ट जीवन शैली में विश्व की अनेक जटिल व गंभीर समस्याओं के समुचित समाधान प्राप्त होते हैं।

पर्यावरण सम्बन्धी आधारभूत अवधारणाओं का सर्वप्रथम दर्शन वैदिक वाङ्मय में प्राप्त होता है। वेद प्रकृति एवं मनुष्य के अन्तःसम्बन्धों की सर्वश्रेष्ठ व्याख्या करते हैं तथा इनमें प्रकृति व शाश्वत नियमों पर आधारित पर्यावरण चेतना एवं चिन्तन का पर्याप्त निदर्शन किया गया है।

वर्तमान विश्व गंभीर पर्यावरण संकट से जूझ रहा है। सामाजिक, भौतिक, जैविक तथा सांस्कृतिक आदि सभी स्तरों पर मानव जाति के लिए यह विभीषिका का रूप धारण कर चुका है। सृष्टि के विनाश की आशंका से भयभीत प्रबुद्ध वर्ग, जीव वैज्ञानिक, समाजशास्त्री, खगोलवेत्ता आदि अपने–अपने स्तर पर प्रयासरत हैं। वेदविहित मार्ग में मनुष्य–प्रकृति के सुमधुर सामंजस्य तथा संस्थायी विकास एवं शतायु जीवन के अनेक संभावनाएं उपलब्ध हैं। पर्यावरण के संरक्षण और संवर्धन के क्षेत्र में भारतीय ज्ञान–परम्परा का अनुशीलन एवं अनुसरण महत्वपूर्ण योगदान एवं मार्गदर्शन प्रदान करने में सक्षम है। प्रस्तुत संगोष्ठी ऑनलाईन एवं ऑफलाईन हाईब्रिड माध्यम से वैदिक ज्ञान–परम्परा के विविध आयामों में पर्यावरण संरक्षण, संर्वधन सम्बधी विचारों पर मन्थन करने के लिए संकल्पित है।

प्रमुख शीर्षक एवं उपविषय

- पर्यावरण की वैदिक अवधारणा
- वैदिक साहित्य और सतत विकास
- पंचमहाभूत संरक्षण का वैदिक चिन्तन
- जलवायु परिवर्तन : वैदिक समाधान
- पर्यावरण, नैतिकता एवं वेद
- वेदों में प्रकृति उपासना
- वेदांग एवं पर्यावरण संरक्षण
- वैदिक पर्यावरण प्रबन्धन
- वैदिक साहित्य और जैव विविधता
- वैदिक साहित्य और जलसंरक्षण चेतना
- वैदिक कृषि और पर्यावरण
- पर्यावरणीय चेतना, व्रत, पर्व तथा त्यौहार
- यज्ञ संस्था एवं पर्यावरण
- वैदिक आहार विहार और पर्यावरण संरक्षण
- ज्योतिष, वास्तु एवं पर्यावरण
- वैदिक मनोविज्ञान एवं पर्यावरण

इनके अतिरिक्त भी संगोष्ठी शीर्षक से सम्बन्धित अन्य विषयों पर शोधपत्र आमन्त्रित हैं।

अनुदेश

आलेख प्रस्तुतकर्ता अपने पत्र सारांश को अधिकतम 500 शब्दों में यूनिकोड फान्ट Mangal/Arial Unicode MS साइज 12 में टाइप कर word file में नामांकन फार्म और मौलिकता प्रमाण पत्र के साथ इमेल पते vkvv.uni@gmail.com पर दिनांक 26 मार्च 2024 तक अवश्य भेज दें।

- सारांश प्राप्ति की पुष्टि ईमेल के माध्यम से की जाएगी।
- **पंजीकरण शुल्क –**

विद्यार्थी हेतु	शोधार्थी हेतु	प्राध्यापक व अन्य हेतु
300/–	500/–	800/–

- शोधपत्र में शोधलेखक, सहलेखक का नाम, पदनाम संस्था का नाम, मोबाइल नम्बर तथा ईमेल स्पष्ट रूप से अंकित करें।
- चयनित स्तरीय शोधपत्रों का प्रकाशन विश्वविद्यालय द्वारा किया जायेगा। शोधपत्र हिन्दी, संस्कृत व अंग्रेजी भाषाओं में आमंत्रित हैं।
- शोधपत्र की मौलिकता के सम्बन्ध में समस्त उत्तरदायित्व लेखक/सहलेखक का होगा।

सहभागिता प्रविधि

संगोष्ठी में शोधपत्र प्रस्तुत करने के इच्छुक प्रतिभागी अध्येता/शिक्षक/शोधार्थी/कार्यरत विशेषज्ञ अपने आलेख के सारांश एवं पंजीकरण पत्र (वेबसाइट से डाउनलोड/ऑनलाईन) नियततिथि तक ई–मेल के माध्यम से प्रेषित करें। ऑफलाईन माध्यम से शोध पत्र प्रस्तुत करने वाले प्रतिभागी अपने यात्रा कार्यक्रम के विषय में 26 मार्च तक आयोजन समिति को अवश्य अवगत करायें। ऑनलाईन माध्यम से पत्र प्रस्तुति करने वाले प्रतिभागियों को लिंक उपलब्ध करा दिया जायेगा।

www.skvv.ac.in

पंजीकरण लिंक

महत्वपूर्ण तिथि

पंजीकरण पत्र मय शोध सारांश /शीर्षक भेजने की अंतिम तिथि

26 मार्च 2024

पावन सान्निध्य

ठाकुर श्री शेषावतार 1008 श्री कल्लाजी राठौड़

संरक्षक

श्री कैलाशचन्द्र मूंदड़ा

चेयरपर्सन

सह संरक्षक

प्रो. तारा शंकर शर्मा

कुलपति (प्रेसीडेंट)

विद्वत् सन्निधि

डॉ. राजेश्वरी भट्ट
प्रो. मिथिला प्रसाद त्रिपाठी
प्रो. सत्यप्रकाश शर्मा
प्रो. विनोद शास्त्री
प्रो. मण्डन शर्मा
प्रो. एस. के. कटारिया
प्रो. जे. सी. नारायणन्
डॉ. दूलीचन्द शर्मा
प्रो. नन्दिता सिंघवी
डॉ. कुलदीप पुरोहित
प्रो. विनया क्षीरसागर

प्रो. लक्ष्मी शर्मा
प्रो. बालकृष्ण शर्मा
प्रो. श्रीकृष्ण शर्मा
प्रो. सुधीर आर्य
डॉ. नाथूलाल सुमन
डॉ. लक्ष्मी नारायण पाण्डेय
प्रो. गोविन्दराम चरौरा
डॉ. हरमल रेबारी
प्रो. नीरज शर्मा
प्रो. शालिनी सक्सेना
प्रो. वी. के. जोशी

संयोजक

डॉ. स्मिता शर्मा

अध्यक्ष, संस्कृत विभाग

समन्वयक

डॉ. मधुसूदन शर्मा

कुलसचिव

आयोजन समिति

डॉ. मृत्युंजय तिवारी
मो. 8866774099

डॉ. लोकेश चौधरी
मो. 8899360983

डॉ. सुनील शर्मा
मो. 9782475169

डॉ. चन्द्रवीर सिंह राजावत
सुश्री रचना शर्मा
डॉ. श्रवण कुमार सैनी
श्री देवीलाल कुम्हार
श्री राकेश पारीक

आयोजन समिति – **मनीष चान्दना, देवेन्द्र जैन, सुश्री हर्षिता झाला, साक्षी मिश्रा**

विश्वविद्यालय हेल्पलाईन नं. 8696223225